एत्तो सव्वजीवेसु महादंडओ कादव्वो भवदि ॥ १ ॥

समत्तेसु एक्कारसअणियोगद्दारेसु किमट्ठमेसो महादंडओ वोत्तुमाढत्तओ? वुच्चदे— खुद्दाबंधस्स एक्कारसअणियोगद्दारेणिबद्धस्स[1] चूलियं काऊण महादंडओ वुच्चदे। चूलिया णाम किं ? एक्कारसअणियोगद्दारेसु सूइदत्थस्स विसेसियूण परूवणा चूलिया। जदि एवं तो णेसो महादंडओ चूलिया, अप्पाबहुगणिओगद्दारसूइदत्थं मोत्तूणण्णत्थ वुत्तत्थाणमपरूवणादो त्ति वुत्ते वुच्चदे—ण च एसो णियमो अत्थि सव्वाणिओगद्दारसूइदत्थाणं विसेसपरूविया चेव चूलिया त्ति, किंतु एक्केण दोहि सव्वेहि वा अणियोगद्दारेहि सूइदत्थाणं विसेसपरूवणा चूलिया णाम। तेणेसो महादंडओ चूलिया चेव।

इससे आगे सर्व जीवोंमें महादण्डक करणीय है ॥ १ ॥

शंका—ग्यारह अनुयोगद्वारोंके समाप्त होनेपर इस महादण्डकको कहनेका प्रारम्भ किसलिये किया जाता है ?

समाधान—उक्त शंकाका उत्तर देते हैं—ग्यारह अनुयोगद्वारोंमें निबद्ध क्षुल्लकबन्धकी चूलिका करके महादण्डक कहते हैं।

शंका—चूलिका किसे कहते हैं ?

समाधान—ग्यारह अनुयोगद्वारोंमें सूचित हुए अर्थकी विशेषता कर प्ररूपणा करना चूलिका कही जाती है।

शंका—यदि ऐसा है तो यह महादण्डक चूलिका नहीं हो सकती, क्योंकि यह अल्पबहुत्वानुयोगद्वारसे सूचित हुए अर्थको छोड़कर अन्य अनुयोगद्वारोंमें कहे गये अर्थोंकी प्ररूपणा नहीं करता ?

समाधान—सर्व अनुयोगद्वारोंसे सूचित अर्थोंकी विशेष प्ररूपणा करनेवाली ही चूलिका हो यह कोई नियम नहीं है, किन्तु एक ही अथवा सब अनुयोगद्वारोंसे सूचित अर्थोंकी विशेष प्ररूपणा करना चूलिका है। इसलिये यह महादण्डक चूलिका

---

१ अ. प्रतौ-द्दारणिबंधस्स क प्रतौ-द्दारणिबद्धस्स इति पाठः। 'अणियोगद्दारणिबद्धस्स' इति पाठः।

अप्पाबहुगसूइदत्थस्स विसेसिऊण परूवणादो । एवं पओजणसुत्तं परूविय पयदत्थ-परूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि---

सव्वत्थोवा मणुसपज्जत्ता गब्भोवक्कंतिया[1] ॥ २ ॥

गब्भजा मणुस्सा पज्जत्ता उवरि वुच्चमाणसव्वरासीओ पेक्खिऊण थोवा होंति । कुदो ? विस्ससादो । एदे केत्तिया गब्भोवक्कंतिया ? मणुस्साणं चदुब्भागो ।

मणुसिणीओ संखेज्जगुणाओ ॥ ३ ॥

को गुणगारो ? तिण्णि रूवाणि । कुदो ? मणुस्सगब्भोवक्कंतियचदुब्भागेण पज्जत्तदव्वेण तस्सेव तिसु चदुब्भागेसु ओवट्टिदेसु तिण्णिरूवोवलंभादो ।

सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ॥ ४ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया । के वि आइरिया सत्त रूवाणि, के वि पुण

ही है, क्योंकि, वह अल्पबहुत्वानुयोगद्वारसे सूचित हुए अर्थकी विशेषरूपसे प्ररूपण करता है । इस प्रयोजनसूत्रको कहकर प्रकृत अर्थके निरूपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं---

मनुष्य पर्याप्त गर्भोपक्रान्तिक जीव सबसे स्तोक हैं ॥ २ ॥

गर्भज मनुष्य पर्याप्त जीव आगे कही जानेवाली सब राशियोंको देखते हुए स्तोक हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभावसे है ।

शंका---ये गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य कितने हैं ?

समाधान---मनुष्योंके चतुर्थ भागप्रमाण हैं ।

मनुष्य पर्याप्तोंसे मनुष्यिनियां संख्यातगुणी हैं ॥ ३ ॥

गुणकार कितना है ? गुणकार तीन रूप है, क्योंकि मनुष्य गर्भोपक्रान्तिकोंके चतुर्थ भागप्रमाण पर्याप्त द्रव्यसे उसीके तीन चतुर्थ भागोंका अपवर्तन करनेपर तीन रूप उपलब्ध होते हैं ।

मनुष्यिनियोंसे सर्वार्थसिद्धिविमानवासी देव संख्यातगुणे हैं ॥ ४ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । कोई आचार्य सात रूप, कोई

---

1 थोवा नरअपज्जत्ता तत्तो इत्थीओ तिघनगुणियाओ । बायरतेउक्काया हारिमअसंखेज्ज पज्जत्ता ।। पं. सं. २, ६५

चत्तारि रूवाणि के वि सामण्णेण संखेज्जाणि रूवाणि गुणगारो त्ति भणंति । तेणेत्थ गुणगारे तिण्णि उवएसादो[1] । तिण्णं मज्झे एक्को च्चिय जच्चोवएसो, सो वि ण णव्वइ, विसिट्ठोवएसाभावादो । तम्हा तिण्हं पि संगहो कायव्वो ।

बादरतेउकाइयपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ५ ॥

गइमग्गणमुल्लंघिय मग्गणंतरगमणादो असंबद्धमिदं सुत्तं ? ण, अप्पिदमग्गणं मोत्तूण अण्णमग्गणागमणणियमस्स एक्कारसअणिओगद्दारेसु चेव अवट्ठाणादो । एत्थ पुण ण सो णियमो अत्थि, सव्वमग्गणजीवेसु महादंडओ कायव्वो त्ति अब्भुवगमादो । को गुणगारो ? असंखेज्जाओ पदरावलियाओ । कुदो ? सव्वट्ठसिद्धिदेवेहि बादरतेउपज्जत्तरासिम्हि भागे हिदे असंखेज्जाणं पदरावलियाणमुवलंभादो ।

अणुत्तरविजय-वैजयंत[2]-जयंत अवराजिदविमाणवासियदेवा असंखेज्जगुणा[3] ॥ ६ ॥

चार रूप और कितने ही आचार्य सामान्यसे संख्यात रूप गुणकार है, ऐसा कहते हैं । इसलिये यहां गुणकारके विषयमें तीन उपदेश होनेसे तीनोंके मध्यमें एक ही जात्य (श्रेष्ठ) उपदेश है, परन्तु वह नहीं जाना जाता, क्योंकि, इस विषयमें विशिष्ट उपदेशका अभाव है । इस कारण तीनोंका ही संग्रह करना चाहिये ।

बादर तेजस्कायिक पर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ५ ॥

शंका—गति मार्गणाका उल्लंघन कर मार्गणान्तरमें जानेसे यह सूत्र असम्बद्ध है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, विवक्षित मार्गणाको छोड़कर अन्य मार्गणाओंमें न जानेका नियम ग्यारह अनुयोगद्वारोंमें ही अवस्थित है । किन्तु यहां वह नियम नहीं है, क्योंकि, ' सर्व मार्गणाओंके जीवोंमें महादण्डक करना चाहिये ' ऐसा स्वीकार किया गया है ।

गुणकार क्या है ? असंख्यात प्रतरावलियां गुणकार है, क्योंकि, सर्वार्थसिद्धि-विमानवासी देवोंसे बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिके भाजित करनेपर असंख्यात प्रतरावलियां उपलब्ध होती हैं ।

अनुत्तरोंमें विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित विमानवासी देव असंख्यातगुणे हैं ॥ ६ ॥

---

१ मु. प्रती उवएसा । तिण्हं इति पाठः ।   २ मु. प्रती वैजयंत (जयंत) अवराजित इत्यपाठः ।

३ इतो अणुत्तरदेवा तत्तो असंखेज्ज बादरओ कमो । तत्तो अवहारगुणिया असम सदृशी सहस्सारी ॥

किमट्ठं देवविसेसणं ? तत्थतणपुढविकाइयादिपडिसेहट्ठं । गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि । कुदो ? बादरतेउकाइयपज्जत्तदव्वेण गुणिदतत्थतणअवहारकालेण ओवट्टिदपलिदोवमपमाणत्तादो ।

अणुदिसविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ॥ ७ ॥

गुणगारो[1] संखेज्जा समया । कुदो ? मणुस्सेहिंतो अणुत्तरेसुपज्जमाणजीवे पेक्खिदूण तेहिंतो चेव अणुदिसविमाणवासियदेवेसुप्पज्जमाणाणं जीवाणं संखेज्जगुणाणमुवलंभादो, विस्ससादो ।[2]

उवरिमउवरिमगेवज्जविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ॥ ८ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया । कारणं पुव्वं व परूवेदव्वं ।

उवरिममज्झिमगेवज्जविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ॥ ९ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया । कारणं सुगमं ।

शंका—यहां ' देव ' विशेषण किस लिये दिया है ?

समाधान—वहांस्थित पृथिवीकायिकादि जीवोंके प्रतिषेधार्थ इस सूत्रमें ' देव ' विशेषण दिया है ।

गुणकार पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है जो असंख्यात पल्योपम प्रथम वर्गमूल के बराबर है, क्योंकि, वह बादर तेजस्कायिक पर्याप्त द्रव्यसे गुणित वहांके अवहारकालसे अपवर्तित पल्योपम प्रमाण है ।

अनुदिशविमानवासी देव संख्यातगुणे हैं ॥ ७ ॥

गुणकार संख्यात समय प्रमाण है, क्योंकि, मनुष्योंमेंसे अनुत्तरोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंकी अपेक्षा उनमेंसे ही अनुदिशविमानवासी देवोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव संख्यातगुणे पाये जाते हैं, अथवा विजयादि अनुत्तरविमानवासी देवोंसे अनुदिशविमानवासी देव स्वभावसे ही संख्यातगुणे हैं ।

उपरिम-उपरिमग्रैवेयकविमानवासी देव संख्यातगुणे हैं ॥ ८ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । कारण पहलेके समान कहना चाहिये ।

उपरिम-मध्यमग्रैवेयकविमानवासी देव संख्यातगुणे हैं ॥ ९

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । कारण सुगम है ।

---

१ मु-प्रतौ को गुणगारो ? इति पाठः

२ मु-प्रतौ विस्ससादोवा इति पाठः

उवरिमहेट्ठिमगेवज्जविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ॥ १० ॥

को गुणगारो? संखेज्जसमया कुदो? अप्पपुण्णाणं जीवाणं बहुआणं संभवादो ।

मज्झिमउवरिमगेवज्जविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ॥ ११ ॥

को गुणगारो? संखेज्जसमया । कुदो? अप्पाउआणं जीवाणं बहुआणमुवलंभादो ।

मज्झिममज्झिमगेवज्जविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ॥ १२ ॥

को गुणगारो? संखेज्जसमया । कुदो? सव्वत्थ मंदपुण्णजीवाणं बहुत्तुवलंभादो ।

मज्झिमहेट्ठिमगेवज्जविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ॥ १३ ॥

को गुणगारो? संखेज्जसमया । कुदो? मंदतवाणं बहुआणमुवलंभादो ।

हेट्ठिमउवरिमगेवज्जविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ॥ १४ ॥

को गुणगारो? संखेज्जसमया । कारणं सुगमं ।

उपरिम-अधस्तनग्रैवेयकविमानवासी देव संख्यातगुणे हैं ॥ १० ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है, क्योंकि, अल्प पुण्यवाले जीव बहुत सम्भव हैं ।

मध्यम-उपरिमग्रैवेयकविमानवासी देव संख्यातगुणे हैं ॥ ११ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है, क्योंकि, अल्पायु जीव बहुत पाये जाते हैं ।

मध्यम-मध्यमग्रैवेयकविमानवासी देव संख्यातगुणे हैं ॥ १२ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है, क्योंकि, सर्वत्र मन्द पुण्यवाले जीवोंकी बहुलता पायी जाती है ।

मध्यम-अधस्तनग्रैवेयकविमानवासी देव संख्यातगुणे हैं ॥ १३ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है, क्योंकि, मन्द तपवाले जीव बहुत पाये जाते हैं ।

अधस्तन-उपरिमग्रैवेयकविमानवासी देव संख्यातगुणे हैं ॥ १४ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । कारण सुगम है ।

हेट्ठिममज्झिमगेवज्जविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ॥ १५ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया । कारणं पुव्वं व वत्तव्वं ।

हेट्ठिमहेट्ठिमगेवज्जविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ॥ १६ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

आरणच्चुवकप्पवासियदेवा संखेज्जगुणा ॥ १७ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया । कारणं सुगमं ।

आणद-पाणदकप्पवासियदेवा संखेज्जगुणा ॥ १८ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

सत्तमाए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा ॥ १९ ॥

को गुणगारो? सेडीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेडीपढमवग्गमूलाणि । कुदो? आणद-पाणदव्वेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण सेडिबिदियवग्गमूलं गुणेदूण सेडिमोवट्टिदे गुणगारुवलद्धीदो ।

अधस्तन-मध्यमग्रैवेयकविमानवासी देव संख्यातगुणे हैं ॥ १५ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । कारण पहलेके समान कहना चाहिये ।

अधस्तन-अधस्तनग्रैवेयकविमानवासी देव संख्यातगुणे हैं ॥ १६ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है ।

आरण-अच्युतकल्पवासी देव संख्यातगुणे हैं ॥ १७ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । कारण सुगम है ।

आनत-प्राणतकल्पवासी देव संख्यातगुणे हैं ॥ १८ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है ।

सप्तम पृथिवीके नारकी असंख्यातगुणे हैं ॥ १९ ॥

गुणकार क्या है ? ? जगश्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण है क्योंकि, आनत-प्राणत कल्पके पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण द्रव्यसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको गुणितकर उससे जगश्रेणीको अपवर्तित करनेपर उक्त गुणकार उपलब्ध होता है ।

छट्ठीए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा ॥ २० ॥

को गुणगारो ? सेडितदियवग्गमूलं ।

सदार-सहस्सारकप्पवासियदेवा असंखेज्जगुणा ॥ २१ ॥

को गुणगारो ? सेडिचउत्थवग्गमूलं ।

सुक्क-महासुक्ककप्पवासियदेवा असंखेज्जगुणा ॥ २२ ॥

को गुणगारो ? सेडिपंचमवग्गमूलं ।

पंचमपुढवीएणेरइया असंखेज्जगुणा ॥ २३ ॥

को गुणगारो ? सेडिछट्ठवग्गमूलं ।

लंतव-काविट्ठकप्पवासियदेवा असंखेज्जगुणा ॥ २४ ॥

को गुणगारो ? सेडिसत्तमवग्गमूलं ।

छठी पृथिवीके नारकी असंख्यातगुणे, हैं ॥ २० ॥

गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका तृतीय वर्गमूल गुणकार है ।

शतार-सहस्रारकल्पवासी देव असंख्यातगुणे हैं ॥ २१ ॥

गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका चतुर्थ वर्गमूल गुणकार है ।

शुक्र-महाशुक्रकल्पवासी देव असंख्यातगुणे हैं ॥ २२ ॥

गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका पंचम वर्गमूल गुणकार है ।

पंचम पृथिवीके नारकी असंख्यातगुणे हैं ॥ २३ ॥

गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका छठा वर्गमूल गुणकार है ।

लान्तव-कापिष्ठकल्पवासी देव असंख्यातगुणे हैं ॥ २४ ॥

गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका सातवां वर्गमूल गुणकार है ।

---

१ सुक्कम्मि पंचमाए लंतव चोत्थीए बंभ तच्चाए । माहिंद-सणक्कुमारे दोच्चाए मुच्छिमा मणुया ॥ पं. सं. २, ६६.

१ अ अतौ पंचमहापुढवी क. प्रतौ पंचमापुढवी मु-प्रतौ पंचमपुढवि इति पाठः ।

चउत्थीए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा ॥ २५ ॥

को गुणगारो ? सेडिअट्ठमवग्गमूलं ।

बम्ह-बम्हुत्तरकप्पवासियदेवा असंखेज्जगुणा ॥ २६ ॥

को गुणगारो ? सेडिणवमवग्गमूलं ।

तदियाए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा ॥ २७ ॥

को गुणगारो ? सेडिदसमवग्गमूलं ।

माहिंदकप्पवासियदेवा असंखेज्जगुणा ॥ २८ ॥

को गुणगारो ? सेडिएक्कारसवग्गमूलस्स संखेज्जदिभागो । सणक्कुमार-माहिंद-दव्वमेगट्ठं करिय किण्ण परूविदं ? ण, जहा पुव्विल्लाणं दोण्हं दोण्हं कप्पाणमेक्को च्चिय सामी होदि, तधा एत्थ दोण्हं कप्पाणमेक्को चेव सामी ण होदि त्ति जाणावणट्ठं पुध णिद्देसादो ।

सणक्कुमारकप्पवासियदेवा संखेज्जगुणा ॥ २९ ॥

चतुर्थ पृथिवीके नारकी असंख्यातगुणे हैं ॥ २५ ॥

गुणाकार क्या ? जगश्रेणीका आठवां वर्गमूल गुणाकार है ।

ब्रह्म-ब्रह्मोत्तरकल्पवासी देव असंख्यातगुणे हैं ॥ २६ ॥

गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका नौवां वर्गमूल गुणकार है ।

तृतिय पृथिवीके नारकी असंख्यातगुणे हैं ॥ २७ ॥

गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका दशवां वर्गमूल गुणकार है ।

माहेन्द्रकल्पवासी देव असंख्यातगुणे हैं ॥ २८ ॥

गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके ग्यारहवें वर्गमूलका संख्यातवां भाग गुणकार है ।

शंका— सानत्कुमार और माहेन्द्र कल्पके द्रव्यको इकट्ठा कर क्यों नहीं कहा ?

समाधान—नहीं, जिस प्रकार पूर्वोक्त दो दो कल्पोंका एक ही स्वामी होता है, उस प्रकार यहां दो कल्पोंका एक ही स्वामी नहीं होता, इस बातके ज्ञापनार्थ पृथक् निर्देश किया है ।

सानत्कुमारकल्पवासी देव संख्यातगुणे हैं ॥ २९ ॥

को गुणगारो? संखेज्जा समया । कुदो? उत्तरदिसं मोत्तूण सेसासु तीसु दिसासु ट्ठिदसेडीबद्ध-पइण्णयसण्णिदविमाणेसु सव्विदएसु च णिवसंतदेवाणं गहणादो ।

बिदियाए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा ॥ ३० ॥

को गुणगारो ? सेडिबारसवग्गमूलं सुवसंखेज्जदिभायब्भहियं ।

मणुसा अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ३१ ॥

को गुणगारो ? सेडिबारसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? मणुसअपज्जत्तअवहारकालो पडिभागो ।

ईसाणकप्पवासियदेवा असंखेज्जगुणा[1] ॥ ३२ ॥

को गुणगारो ? सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभागो ।

देवीओ संखेज्जगुणाओ ॥ ३३ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है, क्योंकि सनत्कुमार कल्पवासी देवोंमें उत्तर दिशाको छोडकर शेष तीन दिशाओंमें स्थित श्रेणीबद्ध और प्रकीर्णक नामके विमानोंमें तथा सब इन्द्रक विमानोंमें रहनेवाले देवोंका ग्रहण किया गया है ।

द्वितीय पृथिवीके नारकी असंख्यातगुणे हैं ॥ ३० ॥

गुणकार क्या है ? अपने संख्यातवें भागसे अधिक जगश्रेणीका बारहवां वर्गमूल गुणकार है ।

मनुष्य अपर्याप्त असंख्यातगुणे हैं ॥ ३१ ॥

गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? मनुष्य अपर्याप्तोंका अवहारकाल प्रतिभाग है ।

ईशानकल्पवासी देव असंख्यातगुणे हैं ॥ ३२ ॥

गुणकार क्या है ? सूच्यंगुलका संख्यातवां भाग गुणकार है ।

ईशानकल्पवासिनी देवियां संख्यातगुणी हैं ॥ ३३ ॥

---

१ ईसाणे सव्वत्थ वि बत्तीसगुणाओ होंति देवीओ । संखेज्जा सोहम्मे तदो असंखा भवणवासी ॥ पं. सं. २, ६७.

को गुणगारो ? संखेज्जा समया । के वि आइरिया बत्तीस रूवाणि त्ति भणंति

सोधम्मकप्पवासियदेवा संखेज्जगुणा ॥ ३४ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

देवीओ संखेज्जगुणाओ ॥ ३५ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया बत्तीस रूवाणि वा ।

पढमाए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा ॥ ३६ ॥

को गुणगारो ? सगसंखेज्जदिभागब्भहियघणंगुलतदियवग्गमूलं ।

भवणवासियदेवा असंखेज्जगुणा ॥ ३७ ॥

को गुणगारो ? घणंगुलबिदियवग्गमूलस्स संखेज्जदिभागो ।

देवीओ संखेज्जगुणा ॥ ३८ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया बत्तीसरूवाणि वा ।

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । कितने ही आचार्य गुणकार बत्तीस रूप है, ऐसा कहते हैं ।

सौधर्मकल्पवासी देव संख्यातगुणे हैं ॥ ३४ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है ।

सौधर्मकल्पवासिनी देवियां संख्यातगुणी हैं ॥ ३५ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय या बत्तीस रूप गुणकार है ।

प्रथम पृथिवीके नारकी असंख्यातगुणे हैं ॥ ३६ ॥

गुणकार क्या है ? अपने संख्यातवें भागसे अधिक घनांगुलका तृतीय वर्गमूल गुणकार है ।

भवनवासी देव असंख्यातगुणे हैं ॥ ३७ ॥

गुणकार क्या है ? घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलका संख्यातवां भाग गुणकार है ।

भवनवासिनी देवियां संख्यातगुणी हैं ॥ ३८ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय या बत्तीस रूप गुणकार है ।

पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ असंखेज्जगुणाओ ॥ ३९ ॥

को गुणगारो ? सेडीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेडिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? भवणवासियविक्खंभसूचीए संखेज्जेहि भागेहि गुणिदपंचिंदियतिरिक्खजोणिणिअवहारकालो पडिभागो ।

वाणवेंतरदेवा संखेज्जगुणा ॥ ४० ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया । एदम्हादो सुत्तादो जीवट्ठाणदव्ववक्खाणं ण घडदि त्ति णव्वदे ।

देवीओ संखेज्जगुणाओ ॥ ४१ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया बत्तीसरूवाणि वा ।

जोदिसियदेवा संखेज्जगुणा ॥ ४२ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया । कुदो ? जोदिसियअवहारकालेण[1] वाणवेंतर अवहारकाले भागे हिदे[1] संखेज्जरूवोवलंभादो ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिनी असंख्यातगुणी हैं ॥ ३९ ॥

गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके असंख्यातवें भाग प्रमाण गुणकार है असंख्यात जगश्रेणी प्रथम वर्गमूल गुणकार हैं । प्रतिभाग क्या है ? भवनवासियोंकी विष्कम्भसूचीके संख्यात बहुभागोंसे गणित पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंका अवहारकाल प्रतिभाग है ।

वानव्यन्तर देव संख्यातगुणे हैं ॥ ४० ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इस सूत्रसे जीवस्थानका द्रव्यव्याख्यान नहीं घटित होता, ऐसा जाना जाता है । (देखो जीवस्थान-द्रव्यप्रमाणानुगम सूत्र ३५ की टीका) ।

वानव्यन्तर देवियां संख्यातगुणी हैं । ४१ ।

गुणकार क्या है ? संख्यात समय या बत्तीस रूप गुणकार है ।

ज्योतिषी देव संख्यातगुणे हैं ॥ ४२ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है, क्योंकि, ज्योतिषी देवोंके अवहारकालसे वानव्यन्तरोंके अवहारकालको भाजित करनेपर संख्यात रूप उपलब्ध होते हैं ।

---

१ मु. प्रती कालेण भागेहिदे इति पाठः

देवीओ संखेज्जगुणाओ ॥ ४३ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया बत्तीसरूवाणि वा ।

चउरिंदियपज्जत्ता संखेज्जगुणा ॥ ४४ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया । कुदो ? पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण चउरिंदियपज्जत्तअवहारकालेण ओवट्टिदेवीणमवहारकालभूदसंखेज्जपदरंगुलेसु ओवट्टिदेसु संखेज्जरूवोवलंभादो ।

पंचिंदियपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ४५ ॥

केत्तियो विसेसो ? चउरिंदियपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

बेइंदियपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ४६ ॥

केत्तियो विसेसो ? पंचिंदियपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

तीइंदियपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ४७ ॥

ज्योतिषी देवियां संख्यातगुणी हैं ॥ ४३ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय या बत्तीस रूप गुणकार है ।

चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीव संख्यातगुणे हैं ॥ ४४ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है, क्योंकि, प्रतरांगुलके संख्यातवें भागप्रमाण चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके अवहारकालसे ज्योतिषी देवियोंके अवहारकालभूत संख्यात प्रतरांगुलोंके अपवर्तित करनेपर संख्यात रूप उपलब्ध होते हैं ।

पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ॥ ४५ ॥

विशेष कितना है ? चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके असंख्यातवें भागप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग प्रतिभाग है ।

द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ॥ ४६ ॥

विशेष कितना है ? पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके असंख्यातवें भागप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग प्रतिभाग है ।

त्रीन्द्रिय पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ॥ ४७ ॥

केत्तिओ विसेसो ? बीइंदियपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

पंचिंदियअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ४८ ॥

को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो ? पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण पंचिंदिय अपज्जत्त अवहारकालेण पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्ततेइंदियपज्जत्तअवहारकाले भागे हिदे आवलियाए असंखेज्जदिभागुवलंभादो ।

चउरिंदियअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ४९ ॥

केत्तिओ विसेसो ? पंचिंदियअपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । तेसिं को पडिभागो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

तेइंदियअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ५० ॥

केत्तिओ विसेसो ? चउरिंदयअपज्जत्तअसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

बेइंदियअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ५१ ॥

विशेष कितना है ? द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके असंख्यातवें भागप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग प्रतिभाग है ।

पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ४८ ॥

गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है, क्योंकि, प्रतरांगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके अवहारकालसे प्रतरांगुलके संख्यातवें भागप्रमाण त्रीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके अवहारकालको भाजित करनेपर आवलीका असंख्यातवां भाग उपलब्ध होता है ।

चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ॥ ४९ ॥

विशेष कितना है ? पंचेन्द्रिय अपर्याप्तोंके असंख्यातवें भागप्रमाण है । उनका प्रतिभाग क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग प्रतिभाग है ।

त्रीन्द्रिय अपर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ॥ ५० ॥

विशेष कितना है ? चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तोंके असंख्यातवें भागप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग प्रतिभाग है ।

द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ॥ ५१ ॥

केत्तिओ विसेसो ? तेइंदियअपज्जत्तअसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्ता असंखेज्जगुणा[1] ॥५२॥

को गुणकारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागोवट्टिदपदरंगुलेण बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तअवहारकालेण बेइंदियअपज्जत्तअवहारकाले भागे हिदे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागोवलंभादो ।

बादरणिगोदजीवा णिगोदपदिट्ठिदा पज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ५३ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो? हेट्ठिमदव्वस्स अवहारकाले उवरिमदव्वस्स अवहारकालेण भागे हिदे आवलियाए असंखेज्जदिभागोवलंभादो ।

बादरपुढविपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ५४ ॥

विशेष कितना है ? त्रीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके असंख्यातवें भागप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग प्रतिभाग है ।

बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ५२ ॥

गुणकार क्या है ? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है, क्योंकि, पल्योपमके असंख्यातवें भागसे अपवर्तित प्रतरांगुलप्रमाण बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंके अवहारकालसे द्वीन्द्रिय अपर्याप्तोंके अवहारकालको भाजित करनेपर पल्योपमका असंख्यातवां भाग उपलब्ध होता है ।

बादर निगोदजीव निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ५३ ॥

गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है क्योंकि अधस्तन अर्थात् पूर्वोक्त द्रव्यके अवहारकालमें उपरिम अर्थात् प्रस्तुत द्रव्यके अवहारकालका भाग देनेपर आवलीका असंख्यातवां भाग प्राप्त होता है ।

बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ५४ ॥

---

१ पज्जत्तबादरपत्तेयतरू असंखेज्ज इति विसेसाहिओ । पुढवी आऊ वाऊ बादरअपज्जत्ततेउ तत्तो ॥ गं. मं. २, ७?.

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो सेसं सुगमं ।

बादरआउपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ५५ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । सेसं सुगमं ।

बादरवाउपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ५६ ॥

को गुणगारो ? असंखेज्जाओ सेडीओ पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ ।

बादरतेउअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ५७ ॥

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तेसिमद्धच्छेदणाणि सागरोवमं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणयं ।

बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरा अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा[1] ॥ ५८ ॥

गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । शेष सूत्रार्थ सुगम है ।

बादर अप्कायिक पर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ५५ ॥

गुणाकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । शेष सूत्रार्थ सुगम है ।

बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ५६ ॥

गुणकार क्या है ? प्रतरांगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण असंख्यात जगश्रेणियां गुणकार है ।

बादर तेजस्कायिक अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ५७ ॥

गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । उनके अर्धच्छेद पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन सागरोपमप्रमाण हैं ।

बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ५८ ॥

---

१ बादरतेउ निगोदा पुढवी-आउ-वाउ तेउ से बादरा । पत्तो पत्तेयवणप्फदि पुढवी-जल-बादरकाइया य ॥ गो. जी. २, ७१.

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तेसिमद्धछेदणाणि पलिदोवमस्स असंखे-ज्जदिभागो ।

बादरणिगोदजीवा णिगोदपदिट्ठिदा अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ५९ ॥

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तेसिं छेदणाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-भागो ।

बादरपुढविकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ६० ॥

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तेसिं छेदणाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-भागो ।

बादरआउक्काइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ६१ ॥

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तेसिं छेदणाणि पलिदोवमस्स असंखे-ज्जदिभागो ।

बादरवाउक्काइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ६२ ॥

गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । उनके अर्द्धच्छेद पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ।

बादर निगोदजीव निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त असंख्यातगुणे हैं ॥ ५९ ॥

गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । उनके अर्द्धच्छेद पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ।

बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ६० ॥

गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । उनके अर्द्धच्छेद पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ।

बादर अप्कायिक अपर्याप्तजीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ६१ ॥

गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । उनके अर्द्धच्छेद पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ।

बादर वायुकायिक अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ६२ ॥

को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा। तेसिं छेदणा वि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो।

सुहुमतेउकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ६३ ॥

को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा। तेसिमद्धछेदणा वि असंखेज्जा लोगा। कधं णव्वदे? गुरूवदेसादो।

सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ६४ ॥

केत्तियो विसेसो? असंखेज्जा लोगा सुहुमतेउकाइयअपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? असंखेज्जा लोगा।

सुहुमआउकाइयअपज्जत्ता[1] विसेसाहिया ॥ ६५ ॥

केत्तियो विसेसो? असंखेज्जा लोगा सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? असंखेज्जा लोगा।

गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। उनके अर्द्धच्छेद पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं।

सूक्ष्म तेजस्कायिक अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ६३ ॥

गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। उनके अर्द्धच्छेद असंख्यात लोक प्रमाण हैं।

शंका—यह कैसे जाना जाता है?

समाधान—यह गुरुके उपदेशसे जाना जाता है।

सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ॥ ६४ ॥

विशेष कितना है? असंख्यात लोक है जो कि सूक्ष्म तेजस्कायिक अपर्याप्तोंके असंख्यातवें भाग है। प्रतिभाग क्या है? असंख्यात लोक प्रतिभाग है।

सूक्ष्म अप्कायिक अपर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ॥ ६५ ॥

विशेष कितना है? सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंके असंख्यातवें भाग असंख्यात लोक विशेष है। प्रतिभाग क्या है? असंख्यात लोक प्रतिभाग है।

१ अ-आप्रत्योः 'अपज्जत्ता' इति पाठः।

सुहुमवाउकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ६६ ॥

केत्तिओ विसेसो ? असंखेज्जा लोगा सुहुमआउकाइयअपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

सुहुमतेउकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा[1] ॥ ६७ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

सुहुमपुढविकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ६८ ॥

केत्तिओ विसेसो ? असंखेज्जा लोगा सुहुमतेउकाइयपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

सुहुमआउकाइया पज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ६९ ॥

केत्तिओ विसेसो ? असंखेज्जा लोगा सुहुमपुढविकाइयपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

सूक्ष्म वायुकायिक अपर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ॥ ६६ ॥

विशेष कितना है ? सूक्ष्म अप्कायिक अपर्याप्तोंके असंख्यातवें भागप्रमाण असंख्यात लोक विशेष है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोक प्रतिभाग है ।

सूक्ष्म तेजस्कायिक पर्याप्त जीव संख्यातगुणे हैं ॥ ६७ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है ।

सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ॥ ६८ ॥

विशेष कितना है ? सूक्ष्म तेजस्कायिक पर्याप्तोंके असंख्यातवें भागप्रमाण असंख्यात लोक विशेष है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोक प्रतिभाग है ।

सूक्ष्म अप्कायिक पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ॥ ६९ ॥

विशेष कितना है ? सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोंके असंख्यातवें भागप्रमाण असंख्यात लोक विशेष है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोक प्रतिभाग है ।

---

१ संखेज्ज सुहुमपज्जत्त तेउ किंचि (च) हिय भू-जल-समीरा । तत्तो असंखगुणिया सुहुमणिगोदा अपज्जत्ता ॥ पं. सं. २, ७४

सुहुमवाउकाइयपज्जत्ता[1] विसेसाहिया ॥ ७० ॥

केत्तियो विसेसो ? असंखेज्जा लोगा सुहुमआउकाइयपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो। को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा।

अकाइया अणंतगुणा ॥ ७१ ॥

को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो। सेसं सुगमं।

बादरवणप्फदिकाइयपज्जत्ता[2] अणंतगुणा ॥ ७२ ॥

को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहिंतो सिद्धेहिंतो सव्वजीवपढमवग्गमूलादो वि अणंतगुणो। कुदो ? असंखेज्जलोगगुणिदअकाइएहि ओवट्टिदसव्वजीवपमाणत्तादो।

बादरवणप्फदिकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ७३ ॥

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा[3]।

बादर[4] वणप्फदिकाइया विसेसाहिया ॥ ७४ ॥

सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ॥ ७० ॥

विशेष कितना है ? सूक्ष्म अप्कायिक पर्याप्तोंके असंख्यातवें भाग असंख्यात लोक विशेष है। प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोक प्रतिभाग है।

अकायिक जीव अनन्तगुणे हैं ॥ ७१ ॥

गुणकार क्या है ? अभव्यसिद्धिकोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। शेष सूत्रार्थ सुगम है।

बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव अनन्तगुणे हैं ॥ ७२ ॥

गुणकार क्या है ? अभव्यसिद्धिकोंसे, सिद्धोंसे और सर्व जीवोंके प्रथम वर्गमूलसे भी अनन्तगुणा गुणाकार है, क्योंकि, वह असंख्यात लोकसे गुणित अकायिक जीवोंसे अपवर्तित सर्व जीवराशि प्रमाण है।

बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ७३ ॥

गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है। (देखो पुस्तक ३, पृ. ३६५)

बादर वनस्पतिकायिक विशेष अधिक हैं ॥ ७४ ॥

---

१ अ. प्रतौ काइयापज्जत्ता इति पाठः।　　२ अ. प्रतौ काइया पज्जत्ता इति पाठः।

३ अ. प्रतौ 'संखेज्जा लवगा' इति पाठः।　　४ अ. प्रतौ सुहुम इति पाठः।

केत्तियो विसेसो ? बादरवणप्फदिकाइयपज्जत्तमेत्तो ।

सुहुमवणप्फदिकाइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ७५ ॥

को गुणगारो ? असंखेज्जालोगा ।

सुहुमवणप्फदिकाइया पज्जत्ता संखेज्जगुणा ॥ ७६ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

सुहुमवणप्फदिकाइया विसेसाहिया ॥ ७७ ॥

केत्तिओ विसेसो ? सुहुमवणप्फदिकाइयअपज्जत्तमेत्तो ।

वणप्फदिकाइया विसेसाहिया ॥ ७८ ॥

केत्तियो विसेसो ? बादरवणप्फदिकाइयमेत्तो ।

णिगोदजीवा विसेसाहिया ॥ ७९ ॥

केत्तिओ विसेसो ? बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरबादरनिगोदपदिट्ठिदमेत्तो ।

एवं सव्वजीवेसु महादंडओ समत्तो ।

एवं खुद्दाबंधो समत्तो ।

विशेष कितना है ? विशेष बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीवोंके बराबर है ।

सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ७५ ॥

गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है ।

सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव संख्यातगुणे हैं ॥ ७६ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है ।

सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव विशेष अधिक हैं ॥ ७७ ॥

विशेष कितना है ? विशेष सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवोंके बराबर है ।

वनस्पतिकायिक विशेष अधिक हैं ॥ ७८ ॥

विशेष कितना है ? बादर वनस्पतिकायिक जीवोंके बराबर है ।

निगोदजीव विशेष अधिक हैं ॥ ७९ ॥

विशेष कितना है ? बादरनिगोदप्रतिष्ठित बादरवनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंके बराबर है ।

इस प्रकार सब जीवोंमें महादण्डक समाप्त हुआ ।

इस प्रकार क्षुद्रकबंध समाप्त हुआ ।